

अपरिहार्य वि. (तत्.) जिसका परिहार न हो सके, जिसे छोड़ा न जा सकता हो, अनिवार्य।

अपरिहार्यता स्त्री. (तत्.) [अ+परिहार्यता] 1. (किसी वस्तु आदि) परिहार या त्याग न करने की स्थिति 2. जिसका छोड़ा जाना उचित न हो 3. जिसका होना रोका नहीं जा सकता हो 4. अनिवार्यता 5. अवश्यंभाविता।

अपरीक्षणीय वि. (तत्.) जो जाँच या परीक्षा के योग्य न हो।

अपरीक्षित वि. (तत्.) जिसकी परीक्षा न हुई हो, जिसकी जाँच-परख न हुई हो, अप्रमाणित विलो. परीक्षित।

अपरूप वि. (तत्.) 1. कुरूप, भद्दा, बेडौल, सामान्य रूप से भिन्न रूप वाला।

अपरूपण पुं. (तत्.) अपरूप करना या होना।

अपरूपता स्त्री. (तत्.) भद्दापन, कुरूपता, सामान्य रूप से भिन्न होने की स्थिति।

अपरोक्ष वि. (तत्.) जो परोक्ष या अप्रत्यक्ष न हो, प्रत्यक्ष, जो सामने हो। विलो. परोक्ष।

अपरोक्षतः क्रि.वि. (तत्.) प्रत्यक्षतः, प्रत्यक्ष रूप से, जैसे- उन्होंने अपरोक्षतः किसी को कुछ नहीं कहा।

अपरोक्षानुभूति स्त्री. (तत्.) [अ+परोक्ष+अनुभूति] 1. प्रत्यक्षज्ञान 2. साधक को होने वाला प्रत्यक्ष ब्रह्म का ज्ञान या प्रत्यक्ष ब्रह्म ज्ञान से संबंधित अनुभव 3. वेदांत का एक प्रकरण।

अपरोध पुं. (तत्.) निषेध, वर्जन।

अपरोप पुं. (तत्.) 1. उन्मूलन, निष्कासन 2. राज्य से हटना या हटाना, विध्वंस।

अपर्ण वि. (तत्.) पर्णविहीन, पत्र-विहीन, जिसमें पत्ते न हो।

अपर्णहरिती स्त्री. (तत्.) [अ+पर्णहरिती] वन. वृक्षों, लताओं आदि की वे पत्तियाँ जिनमें पर्णहरित होने का तत्व विद्यमान न हो non chlorophyll

अपर्णा स्त्री. (तत्.) (शिव की प्राप्ति के लिए तप करते समय पत्ते तक खाना छोड़ देने वाली) पार्वती।

अपर्णी वि. (तत्.) [अ+पर्णी] वन. वे पौधे या औषधियाँ आदि जिनमें पत्तियाँ होती ही न हों, जैसे- cactus

अपर्यंत वि. (तत्.) अनंत, असीम, अपरिमित।

अपर्याप्त वि. (तत्.) जो पर्याप्त, पूरा या यथेष्ट न हो, अपूर्ण, नाकाफी विलो. पर्याप्त।

अपर्याप्तता स्त्री. (तत्.) [अपर्याप्त+ता प्रत्यय] 1. किसी चीज के पर्याप्त न होने का भाव या स्थिति 2. अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3. अयोग्यता, अक्षमता।

अपर्याप्ति स्त्री. (तत्.) [अ+पर्याप्ति] दे. अपर्याप्तता।

अपर्याय वि. (तत्.) 1. क्रमविहीन, अव्यवस्थित 2. पर्याय-रहित।

अपर्व पुं. (तत्.) क्रमहीनता 1. जिस दिन पर्व न हो; पूर्णिमा, अमावस्या, एकादशी आदि से भिन्न दिन 2. संधि-रहित 3. पौरी-रहिता।

अपल क्रि.वि. (तत्.) [अ+हि-पलक] 1. बिना पलक झपकाए 2. जिसकी पलकें न गिरें या स्थिर रहें 3. एकटक, एकटकी दृष्टि से।

अपलक क्रि.वि. (तत्.) देखते समय पलक न झपकाते हुए, एकटक, निर्निमेष, अनिमेष।

अपलक्षण पुं. (तत्.) कुलक्षण, दोष, अशुभ लक्षण।

अपलाप पुं. (तत्.) 1. मिथ्यावाद, निरर्थक बात, बकवास, व्यर्थ की बातें करना 2. (सत्य) छिपाना।

अपलापी वि. (तत्.) [अप+लापी] 1. अपलाप करने वाला 2. व्यर्थ की बकबक करने वाला 3. किसी सत्य बात को छिपाकर इधर-उधर की बातों में उलझाने वाला 4. किसी सत्य बात की अनदेखी करने वाला 5. टालमटोल करने वाला।